महाकवि बनारसीदासजी के संपूर्ण जीवनवृत्त पर आधारित विशिष्ट नाटिका

अर्द्धकथानक

लेखक – डॉ. विवेक जैन, छिंदवाड़ा

पृष्ठभूमि

16 शताब्दी, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियाँ

परिचय विवेक भैया द्वारा

प्रथम दृश्य

बनारसीदास का जन्म

(पात्र–पिता खरगसेन, माता, छिदियाबाई, झिलमिली, इमरतीदेवी,रज्जो, लक्ष्मी)

(माता पिता गंभीर मुद्रा में चर्चा करते हुये)

पिता खरगसेन – कुछ समझ नहीं आता भगवान भी हमसे क्यों रूठे बैठे है, कुल देवी की पूजा अर्चना में हम तो कोई कमी कसर नहीं करते, जिसने जो कहाँ वैसा ही हमने किया फिर भी हमारे यहाँ आज तक संतान का जन्म नहीं हुआ। लगता है इस कुल को आगे बढ़ाने वाली संतान हमारे भाग्य में ही नहीं है।

माता – बात तो आप सहीं कहते हो एक तो घर में कुल दीपक के न होने से वैसे ही अंधेरा हो रहा है और उपर से ये गाँव गली की महिलाओं के मुंह है जो न जाने बंद होने का नाम ही नहीं लेते है समझ नहीं आता ये तरह तरह की बातें करके सच में हमारे दुख की सहभागी बनती है या हमारे दुर्भाग्य का मखौल उड़ाती रहती है।

पिताजी – सुनो ! मेरी बात मानों तो इन सबकी बातों पर ध्यान ही नहीं दिया करो। ऐसी बात करने वाले लोग वास्तव में अपने खानदान की औकात, बचपन में मिले संस्कार, शिक्षा और अपनी निम्न सोच का ही प्रदर्शन ही तो करते है। छोड़ो ये सब बातें हाँ ध्यान आया कल बाजार मैं कपटनपुर वाले दुर्भागीलाल और उनका साला मिल गया था। वो कह रहे थे रोहतकपुर में एक सती माता का मंदिर है जहाँ से आज तक कोई खाली हाथ नहीं लौटा जिसने वहाँ जाकर सच्चे मन से जो मांगा है वो पाया है। सोचता हुँ हमें भी वहाँ एक बार चलना चाहिये।

कामवाली लक्ष्मी – (झाड़ू जाला निकालते हुये)बाई बाबूजी सही कहवत है बड़ो जश है सती माता के मंदिर का।

माता – ठीक ठीक है जरा देख चूल्हा पर मैनें दाल बनने रखी थी उफन तो नहीं गई। ....अब इसमें सोचना क्या है चलों चलते है यदि सती माता हम पर प्रसन्न हो गयी तो शायद हमारे यहाँ भी कुल का दीपक जगमगा उठेगा।

(ठक ठक ठक की आवाज आती है)

माता – कौन है दरवाजा खुला है अंदर आ जाओ।

छिदियाबाई – अरे मैं हूँ छिदिया और झिलमिली।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

झिलमिली – पाये लागो बाई माँ कैसी आओ ।

छिदियाबाई – ऐ हे हे ! अरे मैं गलत समय तो न आ गई ना

झिलमिली – नहीं छिदिया रानी तुम कभी किसी के यहाँ गलत समय पर थोडी न जाती हो । तुम्हारे आने के बाद आदमी को गलत समय चालू होता है ।

छिदिया बाई – का कई झिलमिली ।

झिलमिली – कछु नहीं कुछ नहीं । तुम्हारे कान अब बजने लगे है तो कछु का कछु सुनाई देता है ।

माता – आ जाओ ! आ जाओ बस इन लोगों ही कमी रह गई थी, घर में तो पाँव ही नहीं टिकते जब देखों इसकी खिड़की तो उसके दरवाजे पर कान लगा कर चिपकी रहती है ।

छिदिया बाई – दिन में दरवाजा लगो दिखा तो मुझे लगो कोउ चिंता की बात तो नाहीं । मैं तो बस जान वाली हती कि तुम लोगन की बात कान में पढ़ गई । कोउ की सुख दुख की बात सुनु तो म्हारे तो पाँव उतइ जम जात है । बहिना मुझसे तुमारो ये दुख नहीं देखो जात । आज मंदिर में दुर्भागीलाल की लुगाई मिली हती, वो भी रोहतकपुर वाली सती माँ के गुणगान गावत नहीं थक रही थी । मेरी बात मानो तो देर न करो । काये तुम्हारी खुशी में तो हमारी खुशी आये । बहुत दिना हो गये कोई अच्छी बात सुने जहाँ देखो बात रोनो धोना लड़ाई झगड़ा सुन सुन के तो मारे कान पक गये ।

माता – ठीक ठीक है पर एक बात तो बता किसी के घर पर कान लगाकर उनकी बाते सुनना अच्छा है क्या ।

छिदिया बाई – मुँह बनाते हुये ....जे लो बाई भलाई को तो जमानो ही नाई । भगवान ने कान तो सुनन के लाने दये है । दिक्कत तो तारे घर की दीवाल के कान की है ओको बंद करो मोहे काये बोलत बाई । चलो मैं चली मैं को का पड़ी कोय की तीन पाँच की पंचायत करबे में । (कहते हुये चली जाती है)

माता – अरे बुरा मत मान छिदिया बाई ।

पिताजी – सुनो छोड़ो ये बाते... और रोहतकपुर चलने की तैयारी करो । कल सुबह ही निकलेगें । मैं रास्ते का सारा बंदोबस्त करके आता हूँ ।

माता – ठीक है अब देर न करो........ हे सती माँ अब निराश न करना ।

सूत्रकार – (सन् 1576 में माता पिता सती माता की यात्रा को निकले है पाप के उदय में जीव की बुद्धि भी सही गलत का निर्णय करने में विवेक शून्य हो जाती है । पिता खरगसेन व माता देवी देवताओं के चक्कर में सारी धन पूंजी लगाते रहें । माँ ने अपने जेवर साहूकार के घर रख दिये पिताजी ने भी बाजार से पैसा उधार लेकर रोहतकपुर को प्रस्थान किया । पर दुर्भाग्य ने पीछा न छोड़ा रास्ते मैं डाकुओं ने सब कुछ लूट लिया । खाली हाथ सती को माथा ठेकने पहुंचे और साथ में मिथ्यात्व का बोझा लेकर जौनपुर वापिस आ गये) । आखिरकार जो होना है सो तो निश्चित ही है किन्तु अज्ञानी जीव इसमें भी अपनी खोटी बुद्धि लगाकर मिथ्यात्व को ही पुष्ट कर लेते है ।बहुत प्रयत्नों व प्रतीक्षा के बाद 1586 में रविवार के दिन पिता खरगसेन के घर जौनपुर में एक बालक का जन्म हुआ ।

(छिदिया बाई झिलमिली, रज्जो, इमरतीदेवी का प्रवेश)

छिदिया बाई – अरे बधाई हो बाई बधाई हो तुम्हार घर में बच्चन की किलकारी सुनी तो म्हारे तो पाँव ही न रुके । देखो मैं कहत न थी सती माँ जरूर तुम्हारी मन्नत पूरी कर दे है ।

रज्जो – सचमुच बड़ी खुशी की बात आये री जीजी

इमरती देवी – बाबूजी हम तो मिठाई खाये भी और संग डिब्बा भर ले जाये भी । (एक मुंह में खाकर डिब्बा में भरने लगती है)

अरे मैं तो भूल ही गई अरे लक्ष्मी सुन वो गुड़ के लडडू तो लेते है सबका मुंह मीठा करावें।

लक्ष्मी – हाँ बाई ला रही हूँ । (लाओ लाओ सभी लोग लडडू खाते है)

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

छिदियाबाई – (2 लडडू पल्ला में बाधनें लगी)
झिलमिली – जे क्या कर रही हो छिदिया बाई
छिदियाबाई – ऐसो है कि मैं बार बार मुंह नहीं झूठात हूँ बस 6 बेर को म्हारो खाने को नियम आये।
झिलमिली – जे कैसो नियम आये बाई
रज्जो – कितनो प्यारो लग रहो है ये बाबूजी को छिटुआ। सही कहू न बाबूजी बिलकुल रस गुल्ला आये रसगुल्ला।
इमरती देवी – कहा आये रसगुल्ला बाई किते दिख गओ तुमे।
रज्जो – डिब्बा भर गओ पर मन ने भरहे ऐ इमरतीदेवी को। लगत है लार टपकातई पैदा भई हती तभी तो अम्मा ने धरदओ नाम इमरतीदेवी।
इमरती देवी – हमें पचत है तो खात है तेरो काय पेट दुखत है रज्जो ले पकड डिब्बा मैकों नहीं लेने आये।
रज्जो – अरे कछु छोडो भी है जो लेने नही आये कर दई सबको चूरा।
पिताजी – अरे सुनती हो अंदर और लडडू के लिये कह दो। हमारे लिये आज खुशी का दिन है जितनी चाहों ले लो।
माता – अरे लक्ष्मी देख लियो इन लोगन को ......जाओ अंदर भोजनशाला में चले जाओ।
लक्ष्मी– आ जाओ भुगमरियों खिलात हूँ तुम्हे लडडू।
माता – धन्य हो प्रभु बड़ी कृपा हुई आपकी ... बाई आखिरकार भगवान ने हमारी सुन ही ली।
पिताजी – (बालक को गोदी में लेकर) आज मेरा घर भी कुल दीपक के आने से जगमगा उठा है। किन्तु मन ही मन एक भय सताता है कि कही मेरे पाप के उदय का असर इस बालक पर न पढ़े।
माता – अब आप भी इस प्रसन्नता घड़ी में मनहूसी की बात न सोचो। सब चिंतायें छोड़ भगवान सबका भला ही करेगें। अच्छा अब बताओं आपने मेरे मुन्ने के लिये क्या नाम सोच रखा है।
पिताजी – हाँ तुमने अच्छी बात याद दिलाई ये विचार तो मेरे मन में भी बहुत दिनों से चल रहा था और मैनें सोचा है कि हम अपने बालक को विक्रमाजीत कहकर पुकारे तो कैसा रहेगा। कहो ठीक है न नाम
माता – विक्रमाजीत हाँ हाँ बहुत प्यारा नाम है जैसा मेरा मुन्ना प्यारा है वैसा ही नाम आपने सोचा।
सूत्रकार – अज्ञानता और मिथ्यात्व की कलुषित छाया से मूख मोही अज्ञानी जीवों का बच पाना बड़ा कठिन कार्य है मोह की महिमा भी विचित्र है क्या करे संसार का स्वरूप ही कुछ ऐसा है और इधर समय के साथ विक्रमाजीत भी बड़ा होने लगा। पर आपके मन में ये विचार आ रहा होगा कि आखिरकार विक्रमाजीत का नाम बनारसी दास कैसे पड़ गया ये भी एक रोचक प्रसंग है। बात कुछ ऐसी है कि जब विक्रमाजीत 6–7 माह का हुआ तो खरगसेन सकुटुम्ब भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन करने बनारस गये। कुगुरुओं को मानने वालों को भी कभी कभी सच्चे भगवान की याद आ ही जाती है। परन्तु क्या वह उनका स्वरूप जानते है। चलो भाई हम भी चलते है बनारसनगरी के पार्श्वप्रभु के दर्शन को .... और देखे फिर आगे क्या हुआ।

दृश्य–2
(विक्रमाजीत से बनारसीदास)

(पात्र – पिता खरगसेन, माता, बालक विक्रमाजीत, पंडा पुजारी, दर्शनार्थी, बैलगाडी वाला धामू)

बैक ड्रॉप – बनारसनगरी बाजार व मंदिर का दृश्य
पिताजी – जय हो जय हो जय हो ....भगवान आपकी जय हो ! प्रभु, तीन लोक में आप जैसी सुंदर मूरत किसी की नहीं
माताजी – सच कहते है आप इतनी सुंदर मूरत से नजर हटाने का मन ही नहीं करता।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पुजारी – लगता है कहीं बाहर से आये हो भैया ।
पिताजी – हाँ पुजारी जी हम जौनपुर के रहने वाले है बड़ी प्रतीक्षा व मन्नत के बाद भगवान ने हमारी सुन ही ली और मेरे घर में इस बालक का जन्म हुआ । तो मन किया बालक को प्रभु चरणों में रखकर प्रभु का आर्शीवाद लें ले ।
चिरजीवं कीजे यह बाल, तुम सरनागत के रखवाल ।
पुजारी – (ध्यान का नाटक करते हुये)
माताजी – अरे इन्हें क्या हो गया
पिताजी – पुजारी जी ...... अरे पुजारी जी
पुजारी – भाग्यशाली हो भाई तुम अभी अभी मुझसे भगवान पार्श्वनाथ के यक्ष ने कहाँ है कि यदि इस बालक को दीर्घायु व स्वस्थ रखना चाहते हो तो इसका नाम भगवान पार्श्वनाथ की जन्मनगरी के नाम पर बनारसीदास रख दो भगवान इसकी सदा रक्षा करेगें ।
पिताजी – ऐसा आपसे भगवान ने कहाँ
माताजी – धन्य है धन्य बनारस के पारस बाबा तो भक्तों की कितनी चिंता करते है । सुनोजी अब कुछ मत सोचों मैं तो आज से ही अपने मुन्ने को बनारसी दास ही कहकर पुकारुगी ।
पुजारी – भगवान भला करें भाई तुम्हारा लो प्रभु की आरती पूजा भक्ति कर लो और प्रसन्नता के साथ कुछ दान दक्षिणा भी कर दो ।
सूत्रकार – इस तरह वीतरागी भगवान के मंदिर में आकर भी भोले लोगों ठगा जाते है सच्चे देव के स्वरुप से अनभिज्ञ जनों को ये मिथ्यावादी कथित धर्म के संचालक खोटी युक्ति व उपाय बताकर मानों उनके मिथ्यात्व व अज्ञान पर वज्रलेप कर देते है । मोह की महिमा भी विचित्र है पिताजी ने पुजारी के कहने पर विक्रमाजीत से बनारसीदास नाम तो बदल दिया परन्तु ये नहीं सोचा कि अपना भला बुरा होने का कारण तो अपना पूर्वबद्ध कर्म का परिणाम ही है । सत्य है हमें दुनिया की व्यवस्थायें नहीं अपितु दृष्टि को बदलना होगा ।

और फिर समय के साथ बनारसी दास बड़े होने लगे मानों कठिनाइयों तो आप विरासत में साथ लेकर आये थे । जब पाँच वर्ष के हुये तो संग्रहणी रोग हो गया और लगभग एक वर्ष तक उससे पीड़ित रहे । कुछ ही समय बाद 6–7 वर्ष की उम्र में चेचक से ग्रस्त हो गये । बचपन तो अस्वस्थता में ही व्यतीत हो गया । जब बनारसी दास 8 वर्ष के हुये तो उन्हें चटशाला में पढ़ने को भेजा गया ।

दृश्य –3
(पाठशाला का दृश्य)

(पात्र – पिता खरगसेन, शिक्षक, बालक बनारसीदास, 4–5 बच्चे)

शिक्षक – बच्चों आज हम गिनती बोलना सीखेगें । चलो बोलो 1,2,3,4
सभी बच्चें बोलते है 1,2,3,4 1,2,3,4
अच्छा बनारसी यहाँ आओ और सभी बच्चों को गिनती याद कराओं
बनारसी – जी गुरूजी 1,2,3,4.... भैया बनो होशियार........सबका है कहना...... अनपढ़ न रहना.......जाओं गुरुजी के पास ।
(बच्चे दोहराते है)
गुरुजी – अरे बनारसी ये क्या बोल रहे है ये मैंने तुम्हें कब सिखाया बेटा
(तभी खरगसेन वहाँ से निकलते है)

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

गुरुजी – अरे खरगसेन जी सुनो कहाँ जा रहे हो
पिताजी – प्रणाम गुरुजी, बस यहीं वैद्य के घर तक जा रहा था
गुरुजी – अरे तुम्हारा बच्चा तो जन्म लेते ही काव्य रचना करने लगा मैं तो इन्हें अंक याद करा रहा था उसने उन्हीं अंकों के साथ काव्य बनाकर बड़ी रोचक प्रस्तुति की। लगता है तुम्हारा बालक बहुत मतिव्युत्पन्न है इसे अच्छी शिक्षा देना मुझे लगता है बड़ा होकर ये बहुत प्रतिभाशाली काव्यकार बनेगा।
पिताजी – आप कहते तो सहीं हो गुरुजी ....लेकिन वणिकपुत्र का पढ़ना समाज में अच्छा कहाँ माना जाता है। बिरादरी में तो लोग ऐसा कहते है कि
बहुत पढ़े बामन और भाट, बनिकपुत्र तो बैठे हाट ।।
बहुत पढ़े तो मांगे भीख, मानुह पुत बड़न की सीख ।।
गुरुजी – नहीं भाई खरगसेन यह सोच गलत है। ज्ञान और विद्या से कभी किसी का बुरा नहीं होता है।
पिताजी – ठीक है आपकी बात ध्यान रखूंगा फिर आगे भगवान की मर्जी। देखों भगवान ने बनारसीदास के लिये क्या सोचा है।
(तभी घंटी बजती है और चटशाला की छुट्टी हो जाती है)
पिताजी – चलो बेटा बनारसी तुम्हें घर छोड़ देता हूँ फिर मुझे हाट भी पहुचना है।
(गुरुजी बच्चे सभी चले जाते है)
सुत्रकार –बचपन से ही बनारसी दास को भी अध्ययन पठन की त्रीव लालसा रहती थी। जैसे तैसे अध्ययन करते हुये बनारसी दास ने चौदह वर्ष की उम्र में पहुंचते पहुचते पं. देवदत्तजी के समागम में आकर नाममाला, ज्योतिष, अलंकार, लघुकोक, व खंड स्फुट के चार सौ श्लोकों का अध्ययन कर लिया तथा पढ़ते पढ़ते जौनुपर में ही भानुचंदमुनि के उपासरे में रहकर आपने पंचसंधि, छंद श्लोक, श्रुतबोध, स्नात्रविधि प्रतिक्रमण आदि भी कंठस्थ कर लिया। आप 9 वर्ष की अल्पायुमें पिताके साथ व्यापार हाट में बैंठने लगे थे। सन् 1597 जब वह 12 वर्ष के हुये तो पिता ने इनका विवाह कर दिया लेकिन ये संबंध भी अधिक दिन नहीं चला और शीघ्र ही उनकी पत्नी का देहावसान हो गया।

दृश्य–4

(डगमगाते कदम युवा बनारसीदास के)

(बनारसीदास, गुडडू रंगीला, चारुदत्त, देवदत्त, ससुर अरथमलजी)

(एकांत में बैठकर कुछ श्रृंगार रचना लिखते पढ़ते हुये।)
बनारसीदास – सौन्दर्य का अप्रतिम यौवन इस धरा पर आ गया है रस सपूरित रुप उसका रसिकमन में भा गया है
गुडड् रंगीला – बनारसी ओ बनारसी अरे मित्र कहाँ हो। आज कल बनारसी किस धुन में कहॉ रहता है पता ही नहीं चलता। लगता है घर पर नहीं है।
देवदत्त – नहीं नहीं घर पर ही होगा मैं तो उपवन की तरफ ही से आ रहा हूँ वहाँ तो मुझे नहीं दिखा।
चारुदत्त – कहीं गोमती के तट पर तो नहीं बैठे गये........आशिकी के सम्राट कविराज बनारसी
गुडड् रंगीला – नहीं यार वो गोमती के तट पर भी नहीं दिखा मैं तो कुछ देर पहले ही बल्लू धोबी से कपड़े लेने गोमती तट पर गया था। वहीं से घर पर कपड़े रखकर आ रहा हूँ बनारसी वहाँ नहीं था
चारुदत्त – वैसे इस समय घर पर ही होना चाहिये जरा दरवाजा की कुंडी तो खटकाओ कोई न कोई तो घर पर होगा ही। (ठक ठक ...ठक ठक)

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बनारसीदास – कौन है भाई जरा ठहरो आता हूँ। (कलम हाथ में लिये कुछ कवित्त गुनगुनाते हुये) रूप सुहावना अतिमनभावन......अरे कौन आ गया बढ़ा ही सुंदर शब्दविन्यास मस्तिष्क में निर्मित हो रहा था विचार श्रृंखला को व्यवधान कर दिया। चलो देखना तो पड़ेगा ही आखिर कौन है। (दरवाजा खोलते हुये) अरे..अरे मित्रों तुम लोग आ जाओ भीतर आ जाओ।

देवदत्त – किस गुंनथारे में लगे हो बनारसी भरी दोपहर में घर का दरवाजा लगाये हुये कौन सी खिचड़ी पक रही है

बनारसीदास – बस कुछ नहीं मित्र कल्पनाओं के सौन्दर्य को पृष्ठों पर उतार रहा था। श्रृंगार काव्य का रस ही कुछ ऐसा है कि बाहर क्या चल रहा है पता ही नहीं चलता। सच कहूँ काव्य रस के आगे सब रस फीके भासित होते है।

चारुदत्त – काव्य व श्रृंगार का आनंद अकेले ही भोगना चाहते हो मित्र। जरा दो चार रसपूरित मुक्तक हमें भी सुना दो। तीक्ष्ण गर्मी में कंठ के साथ हृदय भी शुष्क हो गया है।

गुडडू रंगीला – हाँ भाई जरा तेरे श्रांगृारिक काव्य रस की मूसल धारा तो बरसा दे ....ये चारु और देव के सावन भादों नहीं आ रहे है पतझड़ की चपटे खाकर चूसे हुये आम बन गये है ये दोनों के दोनों।

देवदत्त – अब तू अधिक मत बता गुडडू तूं तो जन्म से श्रृंगार सरोवर में डूबा रहता है लगता है तेरे माता पिता को पूत की हरकत पालने में ही दिख गई थी तभी तो तेरे नाम के साथ रंगीला जोड़ दिया।

चारुदत्त – सहीं कहते हो देव। अच्छा चलो बनारसी खोलों तो तुम्हारी श्रृंगारिक करण्डिका

(सभी बैठ जाते है)

बनारसी दास – हाँ हाँ बैठो मित्रों ! आखिरकार यह रचना किसके लिये बनाई है। मित्रों के आनंद के लिये ही तो

नंदनवन की पुष्प लतायें झूम झूमकर तुम्हें बुलाती।

यादों में तो आ जाती तुम किन्तु सत्य में क्यों न आती।।

(बैकड्राप – काव्य पाठ , मित्रगण झूमते डोलते हुये वाह वाह कर रहे है)

गुडडू रंगीला – वाह मजा आ गया बनारसी कुछ भी कहो श्रृंगार वर्णन में तुम्हारा कोई जवाब ही नहीं।

चारुदत्त – सत्य में ऐसा लगता है मानों स्वर्ग सुंदरी श्रृंगार सुसज्जित हो स्वयं काव्यरसिया को प्रेम करने धरातल पर उतर आई हो।

देवदत्त – इतनी सुंदर रचना सुनकर तो बनारसी लगता है कि यदि सम्राट को भी ये काव्य सुना दो तो वो भी राज्य पाठ छोड़कर कल्पना लोक में जा बसे।

चारुदत्त – वैसे इस कवित्त रचना का नाम क्या रखा है तुमने और ये तो बहुत पृष्टों की दिख रही है।

बनारसी – इस कवित्त रचना का नाम तो मैंनें नवरसपदावली रखा है और लगभग 1000 दोहा चौपाई का काव्यग्रंथ है ये।

गुडडू रंगीला – कुछ भी कहो दिल बाग बाग हो गया मन तो करता हैं तुम सुनाते ही रहो बनारसी और हम सुनते ही रहे।

चारुदत्त – ऐ रंगीला सुनाते ही रहो सुनाते ही रहो और कुछ घर द्वार के काम नहीं है। भुल गया तेरी अम्मा ने बाजार से कुछ लाने को कहाँ था।

गुडडू रंगीला – हे राम मैं तो भूल ही गया चलो जल्दी चलो।

देवदत्त – हाँ हाँ चलो चलो नहीं तो आज तो इसकी अम्मा इसकी खटिया खड़ी और बिस्तर आड़ा ही कर देगी। इस रंगीले गुडडू की।

चारुदत्त – ठीक है मित्र चलते है शाम को मिलो गोमती तट पर वहीं जमायेगें काव्यरसिकों की महफिल। गोमती की धार में इस रस को मिला देगें फिर देखना सारा का सारा बनारस रंग रसिया बनजायेगा। (मित्र चले जाते है)

(तभी किसी की अंतिम यात्रा निकलने की आवाज आती है राम नाम सत्य है सत्य बोलो गत्य है)

बनारसीदास – अरे ये किसकी शव यात्रा जा रही है अरे ये तो पुण्यकुमार का पुत्र हांडी लिये हुये है तो क्या

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पुण्यकुमार नहीं रहे सुबह ही तो मुझे मंदिर के बाहर दिखे थे । जीवन की क्षणभंगुरता भी जल के बुद बुदे के समान है । पता नहीं कब किसके प्रस्थान का समय आ जाये और एक मैं हूँ की अपनी ही धुन में मस्त चला जा रहा हूँ ....न परिवार, न व्यापार न धर्म का विकल्प .....धिक्कार है ये भी कोई जीवन है । कुछ करो बनारसी कुछ करो महान जैनकुल में उत्पन्न होकर भी धर्म विरुद्ध प्रवर्तन क्या ये शोभा देता है ।

(तभी अरथमल ढोर ससुर साहब का आना होता है)

बनारसी दास – अरे आईये आईये पिताजी ! जयजिनेन्द्र (कहकर पैर पड़ते है) बैठिये बैठिये ।

अरथमल – बेठा बनारसी आजकल कहाँ रहते हो दिखाई ही नहीं देते अनेक बार घर पर भी आया पर तुमसे मिलना ही नहीं हुआ । पंडित जिनकुमार जी मिले थे उन्होनें मुझे यह आचार्य कुन्दकुन्ददेव कृत समयसार जी दिया बहुत ही महान ग्रंथराज है मैनें इसका स्वाध्याय भी किया जितना भी समझ पाया उतने में ही बहुत आनंद मिला तो लगा कि तुम्हें भी अध्ययन के लिये दे दूँ । तुम तो वैसे ही कवित्त प्रेमी हो शायद तुम इसकी गहराई में ज्यादा अच्छे से उतर सकोगें ।

बनारसीदास – जी धन्यवाद ! समयसार.... इस ग्रंथ को हाथ में लेते ही कुछ अलग ही अनुभूति हो रहीं है । ऐसा क्या है इसमें इतना मोटा ग्रंथ होने पर भी कुछ वजन ही महसूस नहीं हो रहा है । लगता है कुछ अदभुत बात है इसमें चलो समय मिला तो अध्ययन करुँगा । (खोलकर देखते है एक पृष्ठ क्षेपक का मिलता है) अरे इसमें रचे हुये पृष्ठ पर तो कुछ लिखा हुआ है)

राग उदय जब अंध भये सहज सब लोगन लाज गवाई
सीख बिना नर सीख रहे विषयादिक सेवन की सुगराई
ता में जे जीव रचे रस काव्य कहाँ कहिये इनकी निठुराई
अंध असुझन की अखिंयन में झोकत है रज राम दुहाई ।।

अरे इस ग्रंथ में रखे क्षेपक पृष्ठ की बात तो मानो मेरे ही लिये लिखी है । मैं ये कहाँ रचा पचा हूँ ये श्रृंगार रचनायें तो मेरे मन को विकृत कर देती है तो फिर अन्य किसी का क्या हित करेगी । ये कोई आनंद नहीं ये तो विषयों की आसक्ति में होने वाली पागलपन की दशा है । मित्र चारुदत्त तुमने कहाँ था कि इस नवरस को गोमती की धार में मिला कर इसके श्रृंगाररस से सारे वाराणसी को रंग रसिया बना देगें । लेकिन अब ये गोमती की धार में नहीं गोमती के रसातल की भेट चढेगा ।

बैक साउंड (इन्हीं विचारों की उधेड बुन करते हुये बनारसीदास अपने घर के छत पर पहुँच गये तभी एक घटना ओर घटी, बनारसीदास का पैर फिसला और वह नीचे गिर पड़े, रक्त की धारा मस्तक को लहूलहान कर बह उठी)

बनारसीदास – ओह बड़ी जोर से चोट लगी है मेरे सिर से रक्त का प्रवाह रुकने का नाम ही नहीं ले रहा ....हे भोलेनाथ.... अरे ये क्या मैनें शिव की इतनी पूजा भक्ति की, कहाँ है वे शिव जो मुझे विपत्तियों से भी बचाने नहीं आते, कैसे है ये भगवान न खोटे मार्ग पर जाने से रोका और न ही मेरे ठगमगाते कदमों का थामने आये । ऐसे अशरण देव की शरण में जीवन खोने चला था मैं ....नहीं बस अब और नहीं आज से इनकी भक्ति के विकल्प का परित्याग करता हूँ, और ये नवरस रचना अब मेरे किसी प्रयोजन की नहीं अब इसका स्थान गोमती की गहराईयॉ ही है ।

(गोमती तट पर संध्याकाल मित्र प्रतीक्षा कर रहे है)

गुडडू रंगीला – बनारसी अरे बनारसी कहाँ जा रहे है हम लोग यहाँ बैंठे है ।

चारुदत्त – बनारसी तो पूरी पोथी ही लेकर आ गया... लगता है आज महफिल देर रात तक चलना है ।

देवदत्त – लेकिन ये नॉव पर सवार होकर कहाँ जाने को आतुर है ...अरे बनारसी सुनो क्या हुआ हम भी आ रहे है भाई ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बनारसी – मित्रों बताओं आज तक विषपान से कौन निरोगी हुआ है मेरी ये रचना अंधों की आँख में धूल झोकने जैसा काम कर रही है। अब मैनें सोच लिया है इसे गोमती की भेट चढना ही होगा।

गुडडू रंगीला – अरे ये क्या करने जा रहे हो बनारसी। दिमाग तो ठीक है ना इतनी मेहनत से सुंदर श्रृंगार काव्य बनाया और उसे गोमती में बहा देना चाहते हो। यदि तुम्हें इसका लाभ नहीं लेना है तो लाओ हमें दे दों। इसका रसपान कर हम ही तृप्त होते रहेंगे।

बनारसीदास – नहीं मित्रों ये विषय वासनाओं को बढ़ाने वाली रचनाओं से किसी का लाभ नहीं होगा इसका योग्य स्थान गोमती का रसातल ही है (कहकर नवरसपदावली रचना प्रवाहित कर देते है)

....

देवदत्त – हे भगवान बनारसी तुमने ये क्या कर दिया।

बनारसीदास – नहीं मित्रों आज मेरा मन कहता है कि

एक झूठ जो बोले कोई, नरक जाई दुख देखै सोई।
मैं तो कलपित वचन अनेक कहे झूठ सब साचु न एक ।।

क्षमा करना मित्रों अब बनारसी को अपनी भूल ख्याल में आ गई है और नीति भी तो यही कहती है कि पाना नहीं जीवन को बदलना है साधना।

सूत्रकार – सत्संगति के समान कोई सच्चा मित्र नहीं होता और कुसंगति जैसा कोई दूसरा शत्रु इस जगत में नहीं है। यद्यपि बनारसीदासजी के यह कृति यदि आज उपलब्ध होती तो हिन्दी साहित्य के श्रांगृरिक काव्यों में उसका सर्वोच्च स्थान होता। बनारसीदास ने न केवल अपनी श्रृंगार रचना नवरस को गोमती नदी में बहाया किन्तु साथ ही अपने उन व्यसनी मित्रों से भी नाता तोड़ दिया। प्रात: ब्रम्ह मूर्हूत में उठकर प्रभु का ध्यान स्मरण करना प्रारंभ कर दिया। जिनदर्शन के बिना अब दातुन भी नहीं करते थे। व्रत उपवास दिन रात जैन कथा का पठन चिंतन अब जीवन का अंग बन गया। सच ही कहा है

कहैं दोष कोउ न तजैं, तजैं अवस्था पाई। जैसें बालक की दशा, तरुन भए मिटि जाइ।
उदै होत सुभ करम के, भई असुभ की हानि। तातैं तुरित बनारसी, गही धरम की की बानि ।।

पिता खरगसेन को अपने पुत्र के जीवन में ऐसा परिवर्तन देख प्रसन्नता होना भी स्वाभाविक था। तब उन्होनें बनारसीदास को व्यापार कर आजीविका सुदृढ करने हेतु प्रेरित किया।

दृश्य–5

(बनारसी दास की असफल व्यापार यात्रा)

(पात्र – बनारसीदास, पिता खरगसेन, लक्ष्मीनारायण, बखताराम, मलखान, लटका, झटका सुमितारानी, मोनालीराम, रघुनाथ कचौड़ी वाला)

खरगसेन पिताजी – बेटा बनारसीदास मुझे प्रसन्नता है कि तुमने खोटी मित्र मंडली व कुसंगति से अपने को दूर कर जीवन में बदलाव लाने का प्रयास किया है। मैं तो अब वृद्ध हो चला हूँ इस कुल की जिम्मेदारी अब ये वृद्ध कांधे कब तक संभाल पायेगें। अत: मैनें विचार किया है कि मेरे पास जो कुछ भी थोड़ा बहुत जोड़ा हुआ धन है उसे लेकर तुम आगरा चले जाओ और वहाँ कुछ व्यापार शुरु कर एक जिम्मेदार गृहस्थ का जीवन जीओं।

बनारसीदास – पिताजी आप सही कहते है मुझे भी लगता कुसंगति से अपने को बचाये रखने के लिये उन प्रसंगों से दूरी बना लेना ही उचित है अत: जैसी आपकी आज्ञा पिताजी।

खरगसेन – तो ये लो मेरी स्वर्ण मुद्राये , चांदी की पायजेव और कुछ रुपये तथा साथ में बीस मन घी, 2 कुप्पे तेल

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

और जौनपुरी कपड़े की गाठे। धन की पोटली सम्हाल के रखना और आगरा पहुंचकर पत्र लिखना नहीं भूलना।
बनारसीदास – जी पिताजी ! परन्तु मुझे आप सभी की बड़ी चिंता भी होती है।
खरगसेन – तुम यहाँ की चिंता मेरे उपर छोडों बनारसी एवं जाने की तैयारी करो मैं जैसे तैसे परिवार की व्यवस्था चला लूंगा।
बनारसीदास – ठीक है पिताजी मेरे साथ सेठ धनदत्त एवं राजनाथजी के पुत्र भी व्यापार को साथ जाने तैयार है।
लक्ष्मीनारायण – मित्र बनारसी तुम्हारी तैयारी हो गई है तो अपन फिर आगरा के लिये प्रस्थान करे बखताराम भी आ गया है।
बनारसीदास – हाँ चलो सारा समान बैलगाड़ी पर लाद लिया है हाँ ओर ये धन की पोटली साथ रख ली है।
बखताराम – तो मित्रों फिर देर किस बात की चलो चलते है।
(बैक ड्राप म्यूजिक गाँव व जगंल से गुजरते हुये का दृश्य)
माईक से.......... प्रतिदिन पॉच कोस की यात्रा करते बनारसी दास इटावा के पास पहुँचे ही थे कि)
बखताराम – अरे देखों तो मौसम कितना खराब हो चला है काले बादलों से तो सारा आकाश ढक गया है अब तो मार्ग भी स्पष्ट नहीं दिखाई देता है भाई
बनारसीदास – लगता है जोरदार बारिस होने वाली है।
लक्ष्मीनारायण – अब तो जाने बचाने के लिये कही शरण खोजना होगी बनारसी भागो भागो बादल फट रहे है
बनारसीदास – सारे बाजार में कही तिल भर भी छिपने की जगह नहीं दिख रही दौड़ते दौड़ते तो पैर रुई बन गये है उपर से मूसलाधार बारिश के साथ चल रही ठंडी हवा सारा शरीर अकडने लगा है।
सुमितारानी – सुनो भैया आप लोग यहाँ थोड़ी सी जगह है यहाँ बैठ जाओ।
(हॉ हॉ ठीक है बहन बहुत बहुत धन्यवाद)
मोनालीराम – अरे बड़ी आई समाजसेविका इधर खड़े होने की जगह नहीं तेरा खसम पानी से भीगा जा रहा है और तू चली दूसरों को आसरा देने। चुप चाप मुंह सिल के बैठी रह और तुम लोगों किस भाषा में समझ आयेगा चलो निकलो यहाँ से नहीं लगता हूँ अभी दो दो लटठ।
बनारसीदास – अरे अरे भाई क्या करते हो तुम कहते हो तो चले जाते है परन्तु ....चलो बारिस तो थम गई लेकिन बैलगाड़ी और सारा समान न जाने कहाँ चला गया।
लक्ष्मीनारायण – बनारसी आओ इस चबूतरे पर थोड़ा आराम कर लें फिर सोचगें की आगे क्या करना है।
मलखान पहलवान – अरे ओ राहगीरों इस चबूतरे को देखना भी मत नहीं तो टांग तोड़कर हाथ में रख दूंगा। अपने बाप की मालकियत की जगह है ये कोई धर्मशाला का चबूतरा नहीं।
बनारसीदास – भाई हम बहुत परेशान है तुम कहते हो तो हम चले जाते है पर नाराज तो मत हो।
मलखान पहलवान – ऐ सुन लगता है तू किस्मत का मारा है ठीक है कुछ खर्चा पानी हो तो निकाल तेरा बदोबस्त जमाता हूँ।
बनारसीदास – ये लो भाई कुछ बचा ही नहीं है
मलखान पहलवान – हाँ हाँ ठीक है (खुद खॉट बिछाकर उसके उपर लेट जाता है) इसके नीचे चुपचाप आरामकर लो और सुबह होते ही अपना रास्ता नाप लेना)
(सोने की एक्टिंग करते हुये)
लक्ष्मीनारायण – अरे मेरे धन की पोटली कहाँ चली गई बनारसी
बनारसीदास – हाँ मित्र मेरी भी गाँठ कटी है लगता है चूहे गठान काट कर पोटली ले भागे।
बखताराम – हाँ भाई मैनें भी अंधेरे में चूहों की चहलकदमी की आवाज सूनी थी।
लक्ष्मीनारायण – हाय री फूटी किस्मत चले थे कुछ नया बनाने यहाँ तो हाथ की भी चली गई।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बनारसीदास – बीती ताहीं बिसार आगे की सुद ले चलो अब जो कुछ समान है उसे समेटो और आगे चलो।
बखताराम – अब और नहीं चला जाता चलते चलते सांझ हो गई न जाने कब आगरा की सीमा दिखाई देगी।
(तभी दो गरीब मजदूर दिखाई देते है)
बनारसीदास – अरे भाई सुनो सुनो तो कौन हो तुम क्या नाम है तुम्हारा
जी हमारो नाम लटका झटका आये हम लोग बोझियाँ को काम करत है।
बनारसीदास – अच्छे मिल गये भाई हमें आगरा जाना है क्या तुम समान ले जाने में हमारी मदद कर सकते हो तुम्हें मेहनताना भी दे देगें।
लटका झटका – काय नहीं भैया हम तो काम की ही तलाश मे हते।
बखताराम – तो ये लो पोटरी उठा लो और जरा जल्दी चलो रात होने को है।
लटका – काय रे बल्ला इतनी घनघोर रात आये मोहे तो डर लग रियो है
झटका – तो मोहे कौन सो मोहे चांदनी रात को मजा आ रियो है। लटका मैंने तो सुनो है कि जा इलाकों रंगा गड्डुआगंज डाकुअन का है कही रस्ते में दबोच लओ साला ने तो जायेगों अपनों राम नाम सत्य। और फिर मेरे छोटे छोटे से टुरुआ टुरुईयाँ सल्ली गोठी हो जाये अनाथ। मैंको न करने ऐसो काम मैं तो चला लटका
लटका – अरे बाबूजी समालों अपना समान हमें न जाने मुसीबत को बोझ लेके। रुक झटका मैं भी आ रओ हूँ
लक्ष्मीनारायण – अरे सुनो सुनो भाई मझधार में छोडकर काहे भाग रहे हो।
बनारसीदास – हमारा मेहनताना न तो भी चलेगा लेकिन कम से कम आगरे का मार्ग तो बताते जाओ।
बखताराम – अब क्या करें बनारसीदास
बनारसीदास – भाई धैर्य रखो पंचपरमेष्ठी णमोकार मंत्र का स्मरण करो इस जगत में वहीं सच्चे शरणभूत है
(जिस तरह लूट पीठकर आगरा पहुंच जाते है, कुछ दिन अपने एक रिश्तेदार के यहाँ रहकर कुछ व्यापार करने का प्रयास करते है परन्तु असफलता ही हाथ लगती है तब पुन: बनारसीदास अपनी काव्यकला के बल पर दो समय की रोटी का इंतजाम कर पाते है इस तरह 7–8 महीने बीत गये एक दिन बाजार में बनारसीदास कहीं जा रहे थे कि तभी आवाज आई
रघुनाथ कचौडी वाला – अरे कविराज ! कहाँ जा रहे है क्या आज आपका उपवास है आज गरमा गरम कचौडी नहीं खायेगें क्या। कहीं हमसे कोई नाराजगी तो नहीं
बनारसीदास – नहीं भाई नाराजगी की क्या बात तुम जैसे मृदु व्यवहारी और मिष्ट व्यंजन बनाने वाले अच्छे लोग तो ढूढने से भी नहीं मिलते।
रघुनाथ कचौंडी वाला – तो फिर बात क्या है आज मेरे दूकान में रुके बिना सीधे सीधे कहाँ चले जा रहे थे।
बनारसीदास – बस बाजार में कुछ कार्य करने के लिये स्थान की तलाश में निकला था।
रघुनाथ कचौडी वाला – ये लो गरमा गरम कचौडी।
बनारसीदास – अरे कब तक इस तरह मुझ पर भरोसा कर मुफत में खिलाते रहोगें भाई। अभी तो मुझे पहले ही तुम्हें 5–6 माह का पुराना उधार देना बाकी पड़ा है। व्यापार तो कुछ हाथ में जम नहीं रहा ऐसा बोझ बढ़ाकर कैसे काम चलेगा।
रघुनाथ कचौड़ी वाला – कविराज आप भी व्यर्थ का तनाव लेकर बैठे है मुझे पूरा भरोसा है कि आज नहीं तो कल आप मेरा उधार चुका ही देगें। देखो मैं ये अच्छे से जानता हूँ कि सच्चा जैन कभी किसी को धोखा नहीं दे सकता। जो लोग प्रतिदिन मंदिर जाते है, छानकर पानी पीते है, छोटे से छोटे जीवों के प्रति दया का परिणाम रखते है वो क्या किसी का पैसा खा जायेगें। अरे आपके ही तो कारण मैनें अपनी दुकान में भी पानी छानकर ही व्यंजन बनाना चालू किया है।
बनारसीदास – सच में भाई रघुनाथ तुम हृदय के बड़े अच्छे इंसान हो। निश्चिंत रहना बनारसीदास तुम्हारा एक भी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पैसा उधार नहीं रहने देगा।

सूत्रकार – और फिर बनारसीदासजी ने कड़ी मेहनत से बाजार में काम कर जो कुछ थोड़ा बहुत पैसा जोड़ा उससे रघुनाथ कचौड़ी वाले को पूरा उधार चुका दिया। ऐसा करके उन्होनें जैनी के प्रति लोगों के भरोसे को टूटने से बचा लिया। इस विषय मेरा मानना की हम जैनियों का भी ये बड़ा कर्त्तव्य है कि हमारा लौकिक जीवन इतना पारदर्शी व आदर्श हो कि लोग हमारी किसी गलती से सम्पूर्ण जैन समाज, देव शास्त्र गुरु को नीची नजर न देखने पाये। चलिये देखते है व्यक्तित्व एक विकास शील प्रक्रिया है व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त उसके जीवन में निरन्तर परिवर्तन व परिवर्धन हो रहता है अध्यात्म रस लगने से पूर्व बनारसीदास का जीवन भी पूर्णत: बहिर्मुखी ही था आइये देखते मिथ्यात्व के चलते जीव की कैसी कैसी दशा होती है।

दृश्य–6
(मिथ्यात्व रोग से ग्रस्त बनारसी दास)
(बनारसीदास, ग्राहक, निराशाराम, दूकानदार,)

बनारसीदास – कोड़ी ले कोड़ी 1 पैसे की 10 कोड़ी।

ग्राहक – अरे बहुत मंहगी लगाई हो कोउ खाने की चीज आये तनिक देने के भाव कहो तो ले ले।

बनारसीदास – सच है भैया खाने की चीज नहीं है तब तो कोड़ी के भाव दे रहे है चलो तुम 1 पैसे की 12 ले लो।

ग्राहक – मैं तो पन्द्रह ले हूँ पटत है तो कहो नहीं रहन दो।

बनारसीदास – चलो ले जाओं भाई तुम भी क्या याद रखोगें।

निराशाराम – (ढोगी साधु) अलंक निरंजन अलक निरंजन क्या बेचे रहें।

बनारसी दास – कौन हो तुम बाबा

निराशाराम – नादान बालक हम से ही पूछते हो कौन है हम नास्तिक बालक लगता है तुम हमारे मंत्र साधना की महिमा से अपरिचित हो। यहाँ कौन है जो हमको नहीं जानता।

दूकानदार – ऐ झबरादास मेरी दूकान से दूर रहे कितने दिन से नहाया तक नहीं दिख रहा हैं तेरी दुर्गन्ध मेरे कपड़ो में समा गई तो कोई नहीं खरीदेगा।

निराशाराम – मूर्ख चुप रह तूं नही जानता बाबा के क्रोध को ....भस्मीभूत कर दूंगा।

दूकानदार – भस्मी भूत करेगा तू मुझे ....भूत कहीं के चल निकल यहाँ से।

निराशाराम – अर रररररर भूम भाम चूम चाम फॅक़क।

दुकानदार – निकलता है कि जमाउ तेरी (लकडी से भगाता है) भूम भाम चूम चाम

(थोड़ी दूर जाकर वापिस बनारसीदास की दूकान के सामने आ जाता है)

निराशाराम – बच्चा ये तूं क्या बेचा रहा हैं तेरी किस्मत की लकीरें तू ओर कुछ बता रहीं है

बनारसीदास – दिखाई नहीं देता क्या बाबा जिनके बोझ से तुम्हारी गर्दन लटकी जा रही है वो कोडिया ही बेच रहा हूँ। तुम भी ले लो बाबा इतनी कम मूल्य में इतनी सुन्दर कोड़िया पूरे हाट में नहीं मिलेगी।

निराशाराम – बच्चा बाबा को कोड़ियों की क्या जरुरत बाबा के पास तो स्वर्ण की दीनार बनाने वाला मंत्र है।

बनारसी दास – क्या कहाँ स्वर्ण की दीनार बनाने का मंत्र।

निराशाराम – हाँ स्वर्ण की दीनार वो तो तेरी किस्मत की रेखा देख मैं रुक गया बच्चा। अब जल्दी बता क्या तूझे अपनी किस्मत बदलनी है।

बनारसीदास – ठीक है बाबा अब मेरी किस्मत से तुम मिल ही गये हो तो बता ही दो।

निराशाराम – देख बच्चा बाबा तो निर्मोही है ऐसी महान मंत्र विद्या के होने पर भी मैं इस मंत्र विद्या का प्रयोग स्वयं

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अपने लिये नहीं करता। लेकिन तूं भाग्य शाली है बच्चा..... तेरी किस्मत स्वयं उपर वाला लिख रहा है।
बनारसीदास – ठीक है बाबा अब जरा वो मंत्र तो सिखा दो और उसका पाठ कैसे करना है वह विधि भी बता दो
निराशाराम – सुन बच्चा मैंने बहुत परिश्रम से एकांत साधना द्वारा पाखाने में बैठकर इस मंत्र की सिद्धि की है अत: तुम्हे भी यह ध्यान रखना है कि प्रतिदिन तुम्हें शांत मन से पाखाने में एकांत में बैठकर इस मंत्र का जाप करना है। और यदि एक वर्ष तक तुमने इस मंत्र का पूरी आस्था भक्ति से चिंतन कर लिया तो तुम्हारे घर के दरवाजे पर प्रतिदिन प्रात: एक सोने की दीनार गिरा करेगी।
बनारसीदास – क्या कहते हो बाबा पाखाने जैसी अपवित्र जगह पर मंत्र साधना।
निराशाराम – बच्चा तूं नहीं जानता गंदगी तो आदमी के दिमाग व मन में होती है मैं तो पाखाने को वो पवित्र स्थान मानता हुँ जहाँ हम अपनी गंदगी को छोड़कर पवित्रता का आनंद भोगते है। विकारों के बोझ से हल्के हो जाते है।
बनारसीदास – छी छी बाबा गजब है तुम्हारी पवित्रता की परिभाषा।
निराशाराम – अब जल्दी बता बच्चा तुझे वो मंत्र चाहिये कि नहीं बाबा की साधना का समय हो रहा है।
बनारसीदास – चलो ठीक है आपकी साधना इतना जोर मार ही रही है तो अब बता दो।
निराशाराम – भू भाम छूम छाम सूम सीम साम धनवंतदेवा प्रसन्नंत भवा:। (थैले में से कागज निकालकर) लो बच्चा ये मंत्र इस कागज पर लिखा है इसकी सच्चे मन से साधना करना भगवान तेरी किस्मत का लेखा पलट देगा
बनारसीदास – ठीक है बाबा मैं भी अपने भाग्य की परीक्षा करके देख लेता हूँ। धन्यवाद
निराशाराम – धन्यवाद बच्चा ये क्या वस्तु है बाबा ने तुम्हें लक्ष्मीपुत्र बनाने का मंत्र दिया और तू बस धन्यवाद कहकर बाबा को विदा कर देना चाहता है। प्रसन्न चित्त से जो कुछ तेरे पास धन है बाबा की झोली में डाल दे। बाबा की दुआयें कभी खाली नहीं जाती बच्चा।
बनारसीदास – ये लो मेरे पास कुछ दीनार है जो मैंने बहुत परिश्रम से जोड़ी थी। लेकिन बाबा मेरे साथ धोखा तो नहीं होगा न, सोने की दीनार तो रोज गिरेगी न।
निराशाराम – भरोसा रख बाबा का बच्चा बाबा झूठ नहीं बोलता है।
सूत्रकार – (धन लेकर बाबा चला जाता है.....सत्य ही है मिथ्यात्व अज्ञानता से बड़ा इस जीव का कोई दूसरा शत्रु नहीं है जो स्वयं धन में सुख मानकर बैंठे है खोटे वेश मान प्रतिष्ठा में अपने जीवन की सफलता मानते है वह स्वार्थी क्या किसी का हित करेगें। वास्तव में तो सच्चे हित का मार्ग बताने वाले एकमात्र वीतरागी देव शास्त्र गुरु ही है जगत में इन जैसा और कोई उपकारी नहीं है भाई ....और उधर बनारसीदास उस ढोंगी की बात पर विश्वास कर अपनी जमा पूंजी तो पहले ही गंवा बैठे मंत्र साधना भी की तो क्या हाथ आया कुछ नहीं । आता भी कैसे अपने कर्म सिवाय जीव का और न फल देता कुछ भी। आखिरकार यहाँ से भी बनारसीदास का निराशा ही हाथ लगी। यद्‌यपि बनारसीदास का जीवन असफलता की कहानी का बयान बड़ी सफलता पूर्वक करता है और फिर समय किसके लिये कब ठहरा है संघर्षो की यात्रा आगे की ओर बढ़ चली एक असफल व्यापारी बनारसीदास अपने ससुर अरथमलजी एवं मित्र भानुचंद के साथ एक बार फिर पटना की ओर यात्रा को चल पड़े।

दृश्य–7
जनेऊ कथा

(पात्र – ससुर, बनारसीदास, भानुचंद, 2 चोर, रामपाल चौधरी चोरों का सरदार

(पटना की ओर जाते हुये)

अरथमल ससुर – बेटा बनारसी दास क्या तुमने अपनी यात्रा की तैयारी पूर्ण कर ली है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बनारसीदास – जी पिताजी मैनें सभी आवश्यक वस्तुयें रख ली है बस मित्र भानुचंद का इंतजार है उसे समय पर आने को कह तो दिया था पता नहीं विलंब क्यों कर रहा है ।
अरथमल – पता नहीं आजकल के युवाओं के जोश को क्या हो गया, बहुत प्रमादी हो गये है, किसी विषय पर परिपक्वता व गंभीरता से विचार नहीं करते ।
भानुचंद – प्रणाम चाचाजी ! हाँ तो मित्र और क्या देरी है अपने चलने में ।
अरथमल – प्रणाम बेटा कहाँ रह गये थे बनारसीदास बना तुम्हें पता तो है ना हमें पटना पहुंचना है और हमारी मंजिल तक पहुंचने का मार्ग दुर्गम व कठिनाईयों से भरा हुआ है । सांझ ढलने के बाद पटना की ओर जाने वाला रास्ता सुरक्षित नहीं रह जाता, रास्तें में चोरों का एक गाँव भी पड़ता है आज तक वहाँ से कोई भी सुरक्षित नहीं निकल पाया है । चलो अब विलंब न करो जल्दी चलो ।
बनारसीदास – हाँ चलो मित्र भानुचंद आइये चाचाजी
(पटना की ओर आगे बढ़ने लगते है)
भानुचंद – चलते चलते पैर जवाब देने लगे है चाचाजी आप कहे तो कुछ देर यहीं विश्राम कर ले थोड़ा जलपान कर फिर चलते है ।
अरथमल – ठीक है उस वृक्ष के नीचे उचित स्थान दिख रहा है । थकान तो मुझे भी बहुत लगने लगी है । लेकिन हमें सांझ होने से पहले कारीरात ग्राम के जंगलों को पारकर लेना है कहते है कि यह ग्राम चोरों लुटेरों की बाधाओं से भरा पड़ा है ।
बनारसीदास – मुझे नहीं लगता है कि हम सांझ के पहले वो ग्राम पार कर पायेगें, परन्तु मेरे पास एक युक्ति है मैंने सुना है कि चौर ब्राम्हणों को भगवान का प्रतिनिधि जानकर उन्हें परेशान नहीं करते, मेरे थैले में कुछ सूत का धागा पड़ा है इसको हम जनुयें के रुप में धारण कर सकते है । मैनें तो पहन भी लिया ये लीजिये पिताजी, लो भानुचंद तुम भी पहन लो ।
भानुचंद – हाँ लाओ मित्र मैं भी पहन लेता हूँ लेकिन तिलक के लिये क्या करेंगे
बनारसीदास – उसका भी उपाय है मेरे पास मैंने हल्दी वाला पीला नमक भोजन के लिये साथ रखा था इसे गीला कर तिलक बना लेते है ।
अरथमल – वाह बेटा बनारसीदास एक बात तो इस विषम समय में भी तुम बड़े शांत चित्त से युक्तियाँ निकाल लेते हो । लेकिन अब शीघ्रता करो उठाओ अपना समान हम जल्दी आगे बढ़ना चाहिये ।
बनारसीदास – वैसे पिताजी जैन तो उसी को कहते है जो कभी बैचेन नहीं होते है ।
अरथमल – ठीक कहाँ लेकिन एक बात ये भी याद रखना बेटा भयभीत कभी नहीं होना परन्तु सावधान सदा रहना
(तभी दो चोर पीछे से भाला टिका देते है)
चोर – कोई हिलेगा नहीं एक दमई सावधान ।
बनारसीदास – कौन हो तुम लोग भाई और हमें इस तरह से क्यों रोककर पकड़ रहे हो ।
चोर – हा हा हा हम है चोरों के सरदार चौधरी रामपाल ठाकुर के सबसे अनुभवी चोर और अपना काम है राहगीरों का वजन हल्का करना । चलो इन तीनों को रस्सी से बांधकर सरदार के पास ले चलो वहीं करेगें इनका हिसाब किताब । अब मुंह बंद करके चुपचाप चलो । (चिल्लाकर) सरदार सरदार जरा यहाँ तो देखों हम आज कितना मोटा माल लाये है वो भी एक नहीं तीन तीन ।
रामपाल ठाकुर – जियो मेरे रंगीले रतनों ! सरदार बहुत खुश हुआ रे जरा इनके थोबेडे पर उजाला तो दिखा ।
चोर – ये लीजिये सरदार ! (लालटेन से चेहरा देखते हुये)
रामपाल ठाकुर – (चेहरा देखते हुये) तिलक ऽऽ जनुयें ऽऽ – ना मुरादों आंखे के अंधो नाम नैनसुख ये तुम्हें किन्हे उठा लाये । पकड़ जरा लालटेन पहले तो ये लो तुम्हारी आज की मेहनत का हिस्सा ।(दोनों को तमाचे मारता है)

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

चोर – सरदार गलती तो भई लेकिन का भई ये नहीं समझ आओ ।
रामपाल ठाकुर – ब्राम्हण महाराज .... मूर्खो ये तुम इनको क्यों उठा लाये तुमकों पता नहीं 7 पुस्तों से हमारे पूर्वज इनकी पूजा करते आये है । इनके ही आर्शीवाद से तो हमारा ये धन्धा चल रहा है । जल्दी इनकी रस्सी खोलों नालायको
महाराज क्षमा करना ये मुरख नादान है । आपको बड़ा कष्ट हुआ होगा अब आप कोई चिंता न करें आप सभी कहीं दूर से चलकर आये हुये मालूम होते है मेरे घर पर आप निश्चिन्तता पूर्वक आराम करें सुबह होते ही मैं स्वयं आपको सुरक्षित आपकी मंजिल तक छोड़ने का इन्तजाम कर दूंगा । अरे तुम लोग अभी तक यहीं खड़े हो जल्दी से बामन महाराजों के आराम की व्यवस्था करो (जाओ)
चोर – जी सरदार अबै करे देते है ।

रामपाल – और सुनो महाराजन की सेवा में कोई कमी नहीं करना बड़े भाग्य से इनके चरण हमारे ठिकाने पर पड़े है

चोर – सुन तो लई दददा है । तुम्हारे महाराजन के चक्कर में हमको तो परसाद तो मिलई गओ
सूत्रकार – विधि का विधान भी विचित्र है जहॉ एक ओर विपत्तियाँ आती दिख रही थी और वहीं अगले ही पल उदय ने करवट ली तो डाकु ही सेवक बनकर सारी व्यवस्थायें करना लगा । जिनवाणी में सत्य ही लिखा है कार्य विकल्पों से नहीं होता । उदय अनुकलू हो तो छोटी छोटी युक्तियाँ भी बड़े बड़े काम कर देती है । यह बात तो स्पष्ट है के परिस्थितियों व परिवेश के कारण ही कवि का जीवन बर्हिमुखी हो जाना एक सहज प्रक्रिया थी । किन्तु कवित्त का गुण तो मानों बनारसीदास जन्म से साथ लेकर आये थे यहीं कारण है कि हिन्दू धर्म के प्रसिद्ध कवि तुलसीदास का भी बनारसीदास से निकट का परिचय था और दोनों ही मित्रों के मध्य का व्यवहार भी उनकी कवित्त कलाओं से अछूता नहीं था । आइये देखते है दो कवि मित्रों के जीवन की एक झलक ......

दृश्य–8

(तुलसीदास व बनारसीदास का मिलन)

(पात्र – तुलसीदास, बनारसीदास, ग्राहक, राहगीर)

हॉट का दृश्य (सब्जी ले लो, सब्जी हरी ताजी सब्जी......की आवाज आती है)

तुलसीदास – अरे ये काले उडदा की दाल कौन बेच रहा है लगता है कही ये मित्र बनारसीदास तो नहीं, पास जाकर देखना पडेगा । हूं ऽऽ ये तो बनारसीदास ही है ।
(बनारसीदास अन्य ग्राहको से सौदा करने में व्यस्त)
अरे भाई ये क्या श्याम वर्ण की वस्तु है और क्या भाव दे रहे हो (जवाब नहीं मिलता)
अरे सुनते हो चतुर व्यापारी मित्र जरा इधर भी ध्यान दे दो हम भी मोल चुकाकर ही वस्तु लेते है ।
बनारसीदास – काले उडदा की दाल है हॉट में सबसे कम मूल्य में सिर्फ मेरे पास ही है ले लो (देखते हुये)
तुलसीदास – कृष्ण वरण कहो केते,
बनारसीदास – रावण के मुख जेते
तुलसीदास – पवनन्जय करी देहो,
बनारसीदास – नारायण मुख लेहो ।

(सूत्रकार – तुलसीदास अपने कवित्त के अदांज में पूछते है कृष्ण वरण कहो केते – ये श्याम वर्ण की उडद की दाल क्या भाव दी तो बनारसीदास कहते रावण के मुख जेते अर्थात् 1 पैसे की 10 पाई तब तुलसीदास कहते है पवन्नजय करी देहो अर्थात् फटक कर छिलका उतारकर देओगे क्या तब बनारसीदास कहते नारायण

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मुख लेहो याने यदि फटक कर दूंगा तब 1 पैसे में 9 पाई दूंगा। इस तरह मध्यकालीन युग के दो महान मित्र कवियों की वार्ता भी कवित्त शैली में हुआ करती थी।

बनारसीदास – अरे मित्र कहो कैसे हो बहुत दिन हुये तुमसे मिलें हुये आज कल तो बिलकुल दिखाई नहीं देते,

तुलसीदास – हाँ बात तो तुम सहीं कह रहे हो बनारसीदास। सांसारिक उठा पटक से चित्त को हटाकर प्रभु राम की भक्ति में रत रहने की कोशिश कर रहा हूँ। और तुम बताओ मित्र तुम्हारा क्या चल रहा है

बनारसीदास – बस जैसा तुम्हारा हाल है वैसा ही हमारा भी मित्र ....हम भी घर गृहस्थी की उधेडबुन में रहते हुये अपने आत्माराम की खोज में लगे है।

तुलसीदास – बहुत दिनों से तुमसे मिलने का भाव चल रहा था। बनारस में आते ही मित्र बनारसीदास का विकल्प तो आ ही जाता है।

बनारसीदास – चलो भाग्यशाली है हम कि विचारों में ही सही मित्रों के हृदय में स्थान तो सुरक्षित है हमारा।

तुलसीदास – (थैले में हाथ डालकर) वैसे बनारस में रहकर मैं न तो भगवान पार्श्वनाथ को भूला हूँ और न ही उनके भक्त बनारसीदास को। तुम आज भले मिल गये ये देखों मैंने भगवान पार्श्वनाथ की भक्ति में कुछ रचना की है सुनकर तो बताओं गुणानुरुप काव्य है या नहीं।

जिहि नाथ पारस जुगल, पंकज चित चरनन जास।

रिद्धि सिद्धि कमला अजर, राजति भजत तुलसीदास।

बनारसीदास – वाह मित्र वाह ! सुन्दर काव्य रचना – जिति नाथ पारस जुगल पंकज क्या सुंदर शब्द संयोजन किया। तुम्हारी काव्यवलि सुनके मित्र भगवान पारसनाथ की मुद्रा दृष्टि के सन्मुख आ गयी।

तुलसीदास – कवित्त रचना सफल हो गई पारसनाथ के भक्त को काव्य रस भा गया।

बनारसीदास – मित्र बहुत दिनों में आये चलो इस गरीब की कुटिया में कुछ आराम भोजनपानादि कर लेना।

तुलसीदास – नहीं मित्र ! मुझे आवश्यक कार्य से अपने नातेदार परिचित के यहाँ आया हूँ और कुछ परिस्थितिवश यहाँ अभी आने जाने का क्रम चलेगा निश्चय ही पुन: मिलने पर तुम्हारे घर अवश्य चलूंगा।

अरे हाँ एक बात और याद आई मैनें भगवानराम को समर्पित कर रामायण की रचना की एक प्रति तुम्हें देने का भाव था। इसका अध्ययन कर मुझे अपने विचारों से अवगत अवश्य करना।

बनारसीदास – (ग्रंथ लेते हुये) क्यों नहीं मित्र अवश्य।

तुलसीदास – तो फिर ठीक है मुझे आज्ञा दो, सांझ की बेला होने को है

बनारसीदास – ठीक है मित्र शीघ्र ही पुन: मिलना होगा, मैं अवश्य तुम्हारी काव्य रचना का अध्ययन कर अपनी सम्मति तुम्हें दूंगा।

(बैक ड्राप मेटर दिखाना है ....कुछ दिनों के बाद रास्तें में जाते हुये बनारसीदास को तुलसीदास दिखाई देते है)

बनारसीदास – अरे मित्र तुलसीदास सुनते हो

तुलसीदास – तुलसीदास की आवाज प्रतीत होती है (मुडकर) ओ हो बनारसीदास ! कैसे हो मित्र सब कुशल मंगल तो हे ना

बनारसीदास – बस मित्र चल रहा है। देखों कैसा सहज संयोग है आज तुमसे मिलना हुआ और तुम्हारे द्वारा दिया गया रामायण को ग्रंथ भी मेरे हाथ में ही रखा है , मैं सोच ही रहा था कि तुमसे मिलना होगा तो तुम्हारी कृति तुम्हें सौप दूंगा।

तुलसीदास – प्रथम तो यह बताओं तुमने इसका अध्ययन किया कि नहीं

बनारसीदास – अध्ययन कहते हो मैनें इसका भली प्रकार अध्ययन किया और इसके सार रुप में मैंने भी एक जैन रामायण की काव्य रचना की।

तुलसीदास – कहाँ है वह ग्रंथ मित्र

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बनारसीदास – वो तो सार रुप में बनारसी के हृदय में ही स्थित है कहो तो सुना दूं।
तुलसीदास – नेकी ओर पूछ पूछ। उत्सुकता ओर न बढ़ाओ मित्र
बनारसीदास – तो सुनो मित्र तुम्हारी रामायण का सार कुछ पक्तियों में समेटने का प्रयास किया है मैंने
विराजे रामायण घटमांहि, विराजे रामायण घटमांहि।
मर्मी होय मरम को जाने, मूरख जाने नांहि विराजे रामायण घटमांहि।
आतम राम ग्यान गुन लछमन, सीता सुमति समेत।
शुभोपयोग बानरदल मंडित, वरविवेक रन खेत।। विराजे रामायण
इह विधि सकल साधु घट अंतर, होय सहज संग्राम।
यह विवहार दृष्टि रामायण, केवल निश्चय राम।।। विराजे रामायण
तुलसीदास – वाह मित्र वाह तुमने तो मेरी रचना का सार निकालकर गागर में सागर ही भर दिया। चलों अपनी काव्य धारा के प्रवाह को इसी तरह निरंतर धारावाही रखना यहीं एक मित्र की भावना है।

दृश्य–9

(अकबर का राज्य शासन)

(पात्र– अकबर, बनारसीदास, मुल्लासाहब, नामुरादअली, सभासद, द्वारपाल, मुनादीराम)

बनारसीदास व अकबर राजमहल के कक्ष में शतरंज खेलते हुये।
अकबर – ये तो बनारसीदास मेरी शह, कोई मुकम्मल चाल नहीं है तुम्हारे पास अब अपने शतरंज के शंहशाह को बचाने के लिये।
बनारसीदास – नहीं शहंशाह आप वहम में है किस्मत और नीयत कभी भी बदल जाती है, ये लीजिये मेरे वजीर की मात
अकबर – अरे बनारसीदास तुम तो शंतरंज के बहुत ही उमदा खिलाड़ी निकले, हमारे लिये कोई रास्ता ही नहीं छोडा
बनारसीदास – बुरा न माने शहंशाह तो एक बात कहूं। जो रास्ते पर पड़ने वाले मील के पत्थरों को ही मंजिल मान लेते है। वो कभी मंजिल को नहीं पा सकते।
अकबर – क्या कहना चाहते हो बनारसीदास !
बनारसीदास – बस यहीं कि इस शंतरज की तरह ही हम आप जैसे मनुष्य सारा जीवन राज्य वैभव धन स्त्री के कल्पित सुख के संग्रह में ही व्यतीत कर देते है। लेकिन ये विचार नहीं करते कि इन भावों का क्या फल होगा। न जाने कब इस जीवन की शाम आ जायेगी यम कब आकर जिंदगी के खेल में मात दे दे। यम की मात से तो क्या शंहशाह क्या पियादे कौन बच पाया है।
मुल्ताकरजा – बनारसीदास तुम अपनी हद पार कर रहे हो, शंहशाह अकबर को तुम सामान्य मनुष्य में गिन रहे हो
अकबर – शांत रहे मुल्ताकरजा आप ! मुझे यकीन है बनारसीदास कोई गंभीर रहस्य की बात को हमारे समक्ष कहना चाहते है।
बनारसीदास – जी शंहशाह मैं जीवन की सत्यता के बारे में कहना चाहता हूँ।

चाहत है धन होय किसी विध, तो सब काज सरे जियरा जी।
गेह चिनाय बनाये गहना कछु, ब्याह सुता सुत बांटिये भाजी।
चिंतत यो दिन मांहि चले, तव जाम अचानक देत दगा जी।
खेलत खेल खिलाड़ी गये, रह जाये रुकी शंतरंज की बाजी।।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अकबर – वाह क्या बात है बनारसीदास एक छंद में ही जीवन की सत्यता को बखूबी बयान कर दिया है। देखिये मुल्ला साहब बनारसीदासजी ने शंतरंज के खेल में से ही जिंदगी की सच्चाई को दर्पण की तरह दिखा दिया। हम आपकी काव्य चतुरता से प्रसन्न हुये बनारसीदास। हम चाहते है आप हमारे राजदरबार के सभासद के रुप में आसीन हो।

मुल्लासाहब – गुस्ताखी मॉफ हो शंहशाह मात्र एक काव्य की चतुराई से बनारसीदास को राजसभासद का दर्जा देना मुनासीब नहीं है। आप की आज्ञा हो तो हम भरे हुये राजदरबार में इनका इमतिहान लेना चाहते है और यदि ये इमतिहान में सफल हो गये तो फिर शंहशाह

अकबर – तो फिर क्या मुल्ला साहब, और यदि ये सफल हो गये तब आप क्या करेगें

मुल्लासाहब – तो तो मैं शंहशाह में इनको सुबह शाम आदाब अर्ज करुँगा शंहशाह

अकबर – तो फिर ये तय रहा कि परसों राजदरबार में बनारसीदास आपके इमतिहान के लिये सभी के समक्ष उपस्थित रहेगें। बनारसीदासजी अब आप जा सकते है।

मुल्लासाहब – शंहशाह गुस्ताखी माफ करे हजूर। हमने आपका नमक खाया है मुझे ये बनारसी दास बहुत मानी व दंभी लगता है एक तो ये इस्लाम को नहीं मानता और दूसरा ये शंहशाह की खिदमत में झुकता भी नहीं है। हाथ कंगन का आरसी क्या शंहशाह आप स्वयं परसों दरबार में देख लीजियेगा ये अपना सर आपके आगे नहीं झुकाता है। ये आपके शंहशाह पद की तोहीन करता है। यकीन न हो तो नामुरादअली से पूछ लीजिये आप

नामुरादअली – जी जहांपनाह मुल्लासाहब वाजिब फरमा रहे है। मुझे भी बनारसीदास की नीयत में शंका है।

अकबर – ठीक है तो परसों राजदरबार में दूध का दूध पानी का पानी हो जायेगा नामुरादअली। अब हम चलते है हमारे आराम का वक्त हो गया है।

मुल्लासाहब – आज जाल में फसा बनारसीदास अब देखना कौन किसके आगे आदाब अर्ज करता है।

नामुरादअली – पर हूजूर संभलकर रहना ये बनारसीदास की चतुराई में उलझकर कही आपकी कमर उनको आदाबअर्ज करते करते झुक न जाये।

मुल्लासाहब – नामुरादअली तुमने क्या हमको उल्लू का पटठा समझ रखा है।

नामुरादअली – इसमें समझने की क्या बात है।

मुल्लासाहब – क्या कहां तुमने कुछ कहाॅ

नामुरादअली – नहीं नहीं हजूर।

(राजदरबार का दृश्य)

शंहशाह जलालुदीन मोहम्मद अकबर जिंदाबाद जिंदाबाद , मुगल सल्तनत जिंदाबाद

शंहशाहे हिन्दुस्तान जलालुदीन मोहम्मद अकबर पधारे रहे है

मुल्लासाहब – नामुरादअली आज तो बनारसीदास की असलीयत की पोल शंहशाह के सामने मैने खोल के रख देनी है।

नामुरादअली – पर वो कैसे हूजूर मुल्लासाहब आपका दिमाग कब से सोचने को काम करने लगा। नामुरादअली

मुल्लासाहब – हमने अपने शातिर दिमाग से एक ऐसी तरकीब बनाई है कि आज तो बनारसीदास को राजमहल में प्रवेश करते ही शंहशाह के सामने झुकना होगा। हमने आज शंहशाह से गुफतगु करके उन्हें इस बात में राजी कर लिया है कि आज राजदरबार का मुख्य दरवाजा बंद रखा जाये और जब मात्र छोटा दरवाजा ही खोला जाये। फिर देखते है बनारसीदास अंदर घुसने के लिये झुकता है कि नहीं।

नामुरादअली – शंहशाह पधारे रहे हूजूर शंहशाह

(म्यूजिक के साथ अकबर को प्रवेश) राज दरबार के बाहर

बनारसीदास – अरे ये क्या आज राजदरबार के दिन के समय भी मुख्य द्वार बंद कर दिया है जरुर ये मुल्लासाहब के

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

शैतानी दिमाग की कोई चाल है और हाँ छोटा दरवाजा खोल रखा है चलो इसी में से अंदर जाना होगा।
(बनारसीदास छोटे दरवाजे में से पहले अपने पैर अंदर डालते है फिर पीछे की तरफ झुककर सिर अंदर करते है)
अकबर – आओ बनारसीदास सब खैरियत तो है मुल्लासाहब के इम्तिहान की बात से आपके जहन में कोई चिंता तो नहीं लग रही है ना
बनारसीदास – नहीं ऐसी तो कोई बात नहीं शंहशाह, जैन कभी बैचेन नहीं होते।
अकबर – तो ठीक के मुल्लासाहब लीजिये आप बनारसीदासजी का क्या इम्तिहान लेने की बात कर रहे थे।
मुल्लासाहब – जी शंहशाह सल्तनत मैं बनारसीदास से ये जानना चाहता हूँ कि इस समय मेरे दिमाग में क्या चल रहा है और यदि इस बात का जवाब बनारसीदास दे पावें तो मैं इनको सुबह शाम इनके घर जा जाकर झुक झुक के आदाब अर्ज करुंगा।
नामुरादअली – देखना हूजूर कुछ ज्यादा न हो जावे क्योंकि मैंने कहावत सुनी है कि चतुरा कौआ ज्यादातर उउ में बैठता है
मुल्लासाहब – चुप रे नामुराद तेरे मुंह में उउ
अकबर – किन्तु ये कैसा सवाल है कोई कैसे बता सकता है किसी दूसरे के मन में इस समय क्या चल रहा है फिर भी बनारसीदासजी प्रश्न उठा है तो आपको इसका उत्तर तो देना ही होगा।
बनारसीदास – जी शंहशाह ! मुल्लासाहब इस समय अपने भगवान से आपकी दीर्घायु, अच्छे स्वास्थ की दुआ कर रहे है। ऐसा ही हेना मुल्लासाहब कही में गलत तो नहीं।
मुल्लासाहब – ऐ ऐ उ ए जी शंहशाह बात तो कुछ ऐसी ही है।
(सभी जोर जोर से हंसने लगते है)
नामुरादअली – पहले ही बोला था बज गई न बैंड अब करते रहना आदाब अर्ज।
अकबर – किन्तु एक बात समझ नहीं आई बनारसीदास आप हमारे निकटवर्ती जनों में से भी होने पर जहाँ सारी सल्तनत हमारे आगे सिर झुकाती है वहाँ आपको सिर झुकाने में क्या आपत्ति है। आप राजदरबार में अंदर आये तो पहले आपने अपने पैर अंदर डाले बाद में बिना सिर झुकाये अंदर प्रवेश किया।
मुल्लासाहब – अब आया उठ पहाड के नीचे
बनारसीदास – शंहशाह आप एक सरल हृदय के अच्छे व्यक्ति है लेकिन मेरा ये सिर किसी को प्रसन्न करने या किसी लौकिक वांछा के लिये किसी के भी आगे झुक जाये ये एक जैनधर्मावलंबी का श्रद्धान नहीं कहता। क्योंकि मुझे तो
जिय बहुतुक वेष धरे जग में छवि भावही आज दिंगंबर की।
चिंता मंणि जब प्रगटयो घट में फिर कौन जरुरत अडंबर की ।।
जिन तारण तरण ही सेव लियो, परवाह करे को जब्बर की।
जिसे आस नहीं परमेश्वर की मिल आस करों व अकक्बर की ।।
मुल्लासाहब – देख लिया शंहशाह इस बनारसीदास की गुस्ताखी को।
अकबर – नहीं नहीं मुल्ला साहब मुझे प्रसन्नता है कि मेरे दरबार में ऐसे भी सम्मानीय लोग है तो सत्य व सिंद्धात की रक्षा के लिये अपने प्राणों का भी भय नहीं करते है। बनारसीदासजी मुझे आपसे कोई शिकायत नहीं है आप पूर्व की तरह ही हमारे निकटवर्ती सलाहकार व मित्र की तरह ही रहेंगे।
बनारसीदास – शंहशाह की आज्ञा हो तो अब मैं चलता हूँ।
अकबर – चलिये उपवन के पुष्पों की सुगंध हमें भी सैर की दावत दे रही है।
सूत्रकार – कोई बुरा कहे या अच्छा लक्ष्मी आवें या जावें। तो भी न्याय मार्ग से मेरा कभी न पग डिगने पावें। जैन सिद्धांत स्वीकृति के लिये होते है समझौते के लिये । ये मार्ग प्रसन्न होने के लिये दुनिया का प्रसन्न करने के

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

लिये। इस प्रकार बनारसीदास जी एक सत्यप्रिय, स्पष्टवादी, सरलस्वभावी, निरभिमानी, प्रतिभावान, ईमानदार, अध्ययनशील, भावुक, क्रांतिकारी आध्यात्मिक सत्पुरुष तथा लोक प्रिय कवि थे किन्तु किसी के लौकिक जीवन के मात्र नैतिक गुणों की प्रशंसा कर देने से मोक्षमार्ग का पथ तो सिद्ध नहीं हो जाता है। समयसार जैसे महान ग्रंथ के अध्ययन कर लेने पर भी तथा नाटकसमयसार जैसे अध्यात्म रसपूर्ण ग्रंथ की रचना के बाद भी बनारसीदासजी स्वछंदी हो गये वो स्वयं लिखते है गुणस्थान प्रमाण जीव के परिणाम व्यवस्था के सम्यक् निर्णय के अभाव में वह एवं उनके 3 मित्रगण कमरे में निवस्त्र होकर स्वयं को मुनि के समान मानकर विचरण करने लगते थे । आईये देखते है कि वह कौन सा प्रसंग बना जिसने बनारसी दासजी को सच्चा आत्मार्थी मुमुक्षु के साथ साथ अध्यात्म के मर्धन्य कवि के पद पर आरोहित कर दिया।

दृश्य–10

(धर्म मित्रों की चर्चा नाटकसमयसार की रचना)

(पात्र – चन्द्रभान, उदयकरण, थानमल्ल, रुपचंद, बनारसीदास)

बनारसीदास – (अपने घर में नाटक समयसार की रचना कर रहे है)

मोख चलिवे को सौन करम को करे बौन, जाके रस भौन बुध लोन ज्यों घुलत है।
गनु को गरन्थ निरगुन को सुगम पंथ, जाके जसु कहत सुरेश अकुलत है।
याहीं के जु पच्छी ते उड़त ग्यान गगन मैं, याहीं के विपक्षी जगजाल में रुलत है।
हाटक सो विमल विराटक सौ विसतार, नाटक सुनत हिय फाटक खुलत है।

बनारसीदास – अरे क्या समय हो गया ! ओ हो ग्रंथ रचना में समय पता ही नहीं चला, स्वाध्याय गोष्ठी का समय हो गया है साधर्मी मित्र मंदिरजी पहुंच गये होगें। चलो मुझें भी शीघ्रता करनी चाहिये। (मंदिर जाते हुये)

शोभित निज अनुभूति युत चिदानंद भगवान।
सार पदारथ आत्मा सकल पदारथ जान ।।

(सभी मित्र स्वाध्याय गोष्ठी में बैठे हुये है)

चन्द्रभान – आज कुछ विलंब हो गया भाई बनारसीदास।

बनारसीदास – हाँ बस उपयोग लेखनकार्य में टिक गया तो समय का ख्याल ही नहीं आ पाया।

उदयकरण – विशेष क्या लेखन में उपयोग लगा है अभी आपका बनारसीदास

बनारसीदास – लगता है आप लोग भी स्वाध्याय के आनंद रस में भूल जाते है आप ही मित्रों के संग स्वाध्याय व प्रेरणा के फलस्वरूप नाटक समयसार जी ग्रंथ की रचना करने का भाव हुआ।

उदयकरण – ये तो सचमुच प्रशंसनीय व अनुकरणीय कार्य है भाई अपना जीवन आचार्यों भगवंतो के श्रुत संवर्धन जिनवाणी की रचना में लगना निश्चय ही अदभुत कार्य है। तुम्हारे द्वारा नाटकसमयसार जैसे अध्यात्मकाव्य की रचना कर देने से भविष्य में भव्यजीव भगवतकुन्दकुन्दाचार्य, अमृतचन्द्राचार्य जैसे महान मुनिराजों के अध्यात्म रस से वंचित तो नहीं रहेगें।

बनारसीदास – नहीं मित्र नाटक समयसार का रचनाकार मैं कहाँ से हो गया। यदि हमारे पूर्व विद्वान पांडे राजमलजी साहब ने समयसार कलशों के मर्म को बालबोधिनी टीका में नहीं खोला होता तो हम जैसे मंदबुद्धि उन कलशों के अमृत का पान कैसे कर पाते। श्रुतसागर के अपरिमित विस्तार ज्ञान के आगे मैं स्वयं को अल्पज्ञ मानता हूँ किन्तु फिर भी मेरी दशा तो ऐसी है

जैसें कोउ मूरख महा समुद्र तिरिवे कौं, भुजानिसौं उद्यत भयौ है तजि नावरो।
जैसें गिरि ऊपर विरखफल तोरिवे कौं, बावनु पुरुष कोऊ उमगैं उतारवौ ।।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जैसें जलकुंड मैं निरखि ससि प्रतिबिंब, ताके गहिबेकौं कर नीचौ करै टाबरौ ।
तैसें मैं अलपबुद्धि नाटक आरंभ कीनौ, गुनी मोहि हसैंगे कहैंगे कोऊ बाबरौ ।। 12।।

रुपचंदजी – बहुत सुंदर एक आत्मार्थी जीव के जिनश्रुत के रचनाकार होने पर भी स्वयं को उसका कर्तारुप नहीं देखना और अल्पज्ञता का भाव रखकर अपने कार्य का श्रेय भी अग्रणी आचार्यों विद्धानों को दे देना एक सच्चे निकट भव्य जीव के मोक्षार्थी पने के ही लक्षण है भाई ।

थानमल्ल – आप ठीक कहते है पं. रुपचंद जी साहब । जब से हम लोगों ने भी समयसारजी का अध्ययन किया है । तब से हमें भी लगता है कि यदि पर्याय को दृष्टि से हटा दे तो हम भी तो बने बनाये भगवान ही है ।

चन्द्रभान – सत्य कहते हो मित्र थानमल्ल ! आत्मा तो स्वभाव से अकर्ता अपरिग्रही अपने ज्ञान सुख रस से लबालब भरा हुआ । हमें तो गृहस्थ होने पर भी दिगंबर मुनिराजों की तरह नग्नता धारण कर लेने से ऐसा लगता है कि मानों हम भी पंचपरमेष्ठी के समान हो गये ।

बनारसीदास – बात तो सहीं है हम भले कुछ ही देर को सही लेकिन जब नग्न दिगंबर हो जाते है तो ऐसी प्रतीति होती है कि मानों कर्तृत्व का तो सारा बोझ ही दिमाग से हट गया । अहो अपूर्व शांति का वेदन होता है उस काल में तो किन्तु पता नहीं सामान्य जन इस रहस्य को नहीं समझ पाते और हमें खोसरामती कहकर पुकारते है ।

रुपचंद – एक मिनिट एक मिनिट अभी आपने क्या कहॉ बनारसीदास कुछ देर के लिये नग्न दिगंबर हो जाते है । इसका क्या आशय है क्या आप लोग नहीं जानते कि मुनि का वेश कोई धारण करने की वस्तु नहीं है कि जब चाहे मुनि बन गये जब चाहे गृहस्थ । ये तो सहज प्रगट होने वाली दशा का नाम है भाई,... हाँ और ये तो वह रुप है जिसे एक बार धारण कर न तो कलंकित किया जाता है न ही बदला जाता है ।

बनारसीदास – क्या कहते है आप विद्गतवर हमारा तो यही मानना है कि आत्मा तो त्रिकाली शुद्ध ही है । इसमें राग का तो प्रवेश ही नहीं ।

रुपचंद – कथन तो आपका पूर्णत: सत्य है मित्र बनारसीदास किन्तु लगता है कि आप लोगों को गुणस्थान प्रमाण होने वाली जीव के परिणाम को अध्यात्म दृष्टि से सुमेल करना नहीं आता है । मेरा आप सभी को यही परामर्श है कि आप गोम्मटसारजी जैसे करणानुयोग के जीव के परिणामों को बताने वाले ग्रंथों का सर्वप्रथम अभ्यास करें । कहीं भाग्य से मिली अध्यात्म की पूंजी भावुकता व अज्ञानता के कारण भवसमुद्र की गहराई में न खो जावें ।

थानमल्ल – तो देर किस बात की ही है विद्गतवर आप ही हमें गोम्मटसार जी का अभ्यास क्यों नहीं करा देते ।

बनारसीदास – बिलकुल सत्य कहते हो थानमल्लजी इस जीव का प्रथम कर्त्तव्य तो यही है कि दृष्टि संबंधी भूल कोई भूल हो तो उस भूल को रखने का नहीं मिटाने का उपाय करना चाहिये

रुपचंद जी – तो फिर ठीक है हम कल से अपनी गोष्ठी में गोम्मटसार जी ग्रंथ विस्तारेंगे ।

सूत्रकार – इस तरह बनारसी दासजी व उनके मित्रों को महानभाग्य से पंडित रुपचंद जी साहब के साथ बैठकर आगम व अध्यात्म के सुमेल के साथ वस्तु तत्व समझने का अवसर प्राप्त हुआ जिसका फल स्वयं बनारसी दास ने अपने काव्य में लिखा है ।

सुन सुन रुपचंद्र के बैन । भयौ बानारसी तब दिढ जैन ।।
तब फिरी और कबीसुरी, करी अध्यात्ममांहि, यह वह कथनी एकसी, कहुं विरोध किछु नांहि ।।
ह्रदैमांहि कछु कालिमा, हुती सरदहन बीच । सोऊ मिटि समता भई, रही न ऊंच न नीच ।।

रुपचंद जी के द्वारा विधिवत गुणस्थानों की परिपाठी का ज्ञान हो जाने से चारों ही मित्रों की दृष्टि सम्यक् मोक्षमार्गी की बन गई । एक ओर तो बनारसीदास के दृष्टि का परिवर्तन हुआ वहीं दूसरी ओर इस देह का परिवर्तन भी कहाँ

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

रुकने वाला था। वृद्धावस्था में कंठ रोधन रोग ने उन पर धावा बोल दिया। किन्तु सच्चे आत्मार्थी जीवों को इस देह रुप पडोसी के परिवर्तन कहाँ प्रभावित कर सकते थे। अब वह तो सच्चे समयसारी हो गये थे।

दृश्य–11

(रोग अवस्था, तत्वचिंतन व अंतिम समाधि)

(पात्र – चन्द्रभान, उदयकरण, रुपचंद, मायावती, चिंताबाई, बनारसीदास)

चन्द्रभान – मित्र बनारसीदास कहो शारीरिक वेदना के चलते कहीं चित्त विचलित तो नहीं होता।

रुपचंदजी – कैसी बात करते है आप चन्द्रभान जी जिस जीव ने आत्मा को शरीर भिन्न अपने में परिपूर्ण देखने की दृष्टि प्राप्त कर ली हो उसे देह की अवस्था क्या प्रभावित करेगी। हमें तो ऐसी चर्चा उनके सन्मुख करे बिना उनके ही तत्वचिंतन रसकाव्य से निसृत नाटकसमसयार के छंदों का पठन चिंतन करना कराना चाहिये।

आत्मानुभव की दशा का कितना सुंदर चिंतन है भाई

वस्तु विचारत ध्यावते मन पावें विश्राम रस स्वादत सुख उपजैं अनुभव याकों नाम।

अनुभव चिंतामणि रतन अनुभव हैं रसकूप अनुभव मारग मोक्ष को अनुभव मोक्ष स्वरुप ।।

उदयकरण – सत्य कथन है आपका आत्मअनुभव का आनंद तो वचन अगोचर वस्तु है। स्वरूप में एक बारी दृष्टि टिक जाये तो फिर बाहर क्या चल रहा है पता ही नहीं चलता।

चन्द्रभान – हे जीव धन्य है वह जिनके देह छूटने से पहले देह दृष्टि छूट जाती है। हे जीव आपने निरंतर आचार्यों की अध्यात्म वाणी का अमृत पान किया है अब उस अमृतवाणी के मनन चिंतन कर एकाकी आनंद भोगने का काल चल रहा है।

रुपचंद – देखो मुनिराज किस प्रकार आत्मध्यान में शूरवीर है हे जीव तुम भी आत्म आराधना का पुरूषार्थ करो।

मायावती – अरे बाई ! ये बनारसीदास जी कछु बोलते क्यों नहीं, किसी भी प्रश्न का न तो कोई जवाब दे रहे है और न ही कुछ प्रतिक्रया करते है। मुझे तो लगता है कि कहीं इनके प्राण धन दौलत की माया में तो नहीं अटक गये

चिंताबाई – हओ बहिन मैं को भी ऐसो ही लगत है। कि बनारसीदासजी को भी घर गृहस्थी की चिंता सता रही आये ऐसे में प्राण छूट गये तो इनकी आत्मा भटकत रह है।

मायावती – मेरी बात मानों तो इनकी संपत्ति की एक पोटली बनाकर इनके छाती पर धर दो कब से कब इनके प्राण तो शांति से निकल जाहे।

चिंताबाई – हओ हओ तुम सही कहत हो बाई। लगत है बड़ो अनुभव आये तुमें बाई..किसी के मरन जीवन को। जे लो भैया धन की पोटली इनके ऊपर धर के उन्हें बता दो कि धन दौलत को अच्छी तरह से देखकर ओ से अपने मन को हटा ले।

मायावती – णमो अरिहंताण णमो सिद्धाणं

रुपचंद – अरे बहिनों कैसी बात कर रही हो। कोई जीव चार गति के परिभ्रमण से अपने उपयोग को हटाकर मुक्ति की यात्रा की तैयारी के लिये समाधि भावना भा रहा है और हम उसके समक्ष अज्ञान भरी चर्चायें कर उसके उपयोग को विचलित करने का काम कर रहे।

उदयकरण – अरे अरे देखिये बनारसीदासजी हाथ उठाकर कुछ माँग रहे है।

चन्द्रभान – ये लीजिये मित्र कुछ कहना हो तो इस कागज पर लिखकर बता दीजिये। ये लीजिये हाँ सम्हालों भाई सम्हालों इनको।

(कागज पर कुछ लिखते है एवं रुपचंद की तरफ इशारा करते है)

रुपचंद जी– इस पृष्ठ पर बनारसीदासजी ने अपने अंतरभाव को लिख दिया है।

ज्ञान कुतक्का हाथ, मारि अरि मोहना।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्रगटयों रुप स्वरूप, अनंत सु सोहना ।।
जा परजै को अंत, सत्य कर मानना ।
चले बनारसीदास, फर नहिं आवना ।।

रुपचंदजी – हे जीव अपने शुद्धात्मा एवं पंचपरमेष्ठी के अतिरिक्त इस जगत में कोई भी अपना नहीं है । सर्व विकल्पों का परित्याग कर अपने निजस्वभाव को देखना उसमे रमना जमना यहीं एक सुखी होने का मार्ग है सभी जीवों के प्रति क्षमाभाव धारण कर मृत्युजंयी होने की दिशा में प्रयाण करो । हे जीव तुम्हारा आत्मा तो अमूर्तिक प्रदेशों का पूंज, प्रसिद्ध ज्ञानादि गुणों का धारी अनादि निधन वस्तु स्वयं आप है और यह देह तो नवीन संयोगी है संयोग तो वियोग रुप ही होते है ज्ञानी जीव तो संयोग वियोग की अवस्था से भिन्न अपने को ध्रुव रुप अनुभव करते है । (सभी लोग बारह भावना का चिंतन करे)

हम छोड़ चले ये लोक तभी लोकांत विराजे क्षण में जा निज लोक हमारा वासा हो शोंकात बने फिर हमको क्या ।

उदयकरण – लगता है मित्र बनारसीदास जी का देह परिवर्तन हो गया है ।

(कुछ लोग रोने धोने विलाप करने लगते है)

रुपचंद – सभी धैर्य धारण करे एक साधर्मी आत्मार्थी जीव मुक्ति के मार्ग पर आगे बढ़ा है । राग का कार्य तो रुलाने का ही है किन्तु तत्वचिंतन से मन को शांति मिलती है । अब देर न करो हमें अंतिम संस्कार संबंधी कार्य शीघ्र संपन्न करने चाहिये ।

– अंतिम उद्बोधन वाक्य उपसंहार
विवेक जैन

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com